भारतीय प्रबंध संस्थान रोहतक

हिंदी पखवाड़ा

(11 से 24 सितम्बर 2020)

भारतीय प्रबंध संस्थान रोहतक में दिनांक 11 से 24 सितम्बर 2020 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा कोविड 19 महामारी की वजह से प्रतिबंधों के साथ ही मनाया गया है, इसे ऑनलाइन तथा उचित सामाजिक दूरी (social distancing) के साथ मनाया गया । पखवाड़े का उद्घाटन दिनांक 11 सितम्बर 2020 को ऑनलाइन तथा उचित सामाजिक दूरी (social distancing) का पालन करते हुए, माननीय मुख्य अतिथि, निदेशक भारतीय प्रबंध संस्थान रोहतक के कर कमलो द्वारा संपन्न हुआ । जिसमें उन्होंने यह सन्देश दिया कि "इस हिंदी पखवाड़े के दौरान हम विभिन्न यंत्रो में हिंदी के शब्दों को देखते हैं परन्तु हम पूर्णतया इनका उपयोग अपनी कार्यशैली में नहीं करते। बोलचाल की भाषा में हिंदी का उपयोग हमें अपनी संस्कृति तथा सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़े रखती है। आज भारतवर्ष के संचारमाध्यम में भी हमें अपनी संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान से जुड़े रहने के संकेत मिल रहे हैं।

हम हर बार एक प्रण लेते हैं, हमें इस पर कार्य भी करना चाहिए जैसे हमनें भगवद गीता को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया था । छात्रों की रूचि देखते हुए इसे दो दो वर्गों में करना पड़ा। इसी श्रंखला में हम और भी हिंदी की पुस्तकों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का प्रयास करें। आज प्रातः हमने हिंदी पुस्तकों की सूची बनाई है इन पुस्तकों को संस्थान के पुस्तकालय द्वारा क्रय करके पुस्तकालय में पाठकों के पठन पाठन हेतु उपलब्ध किया जायेगा।

इस वर्ष हम यह प्रण लें कि हम एक हिंदी पुस्तक का चयन करें जो कि संस्थान के पुस्तकालय द्वारा पाठकों के लिए उपलब्ध कराई जाएँगी।

आज इस आत्ममंथन की आवश्यकता है कि हमारा जुड़ाव अपनी संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यों से कितना है। यदि हम अमेरिका का उदाहरण लें तो वहां कोई एक आम नागरिक भी अपनी दैनिक बोलचाल में वहां के 4-5 लेखकों या कवियों के बारे में वार्ता कर लेते हैं परन्तु यदि हम में से अधिकतर लोग हिंदी के 4-5 लेखक या कवि और उनकी रचनाओं का सही सही मिलान भी नहीं कर पाएंगे। यह एक चिंतन का विषय है ।

पाश्चात्य देशों ने पुस्तक लेखन का व्यावसायीकरण (कॉपीराइट) किया है जिससे लेखकों को आर्थिक लाभ मिलता है परन्तु इसके विपरीत भारत का दृष्टिकोण इससे 180^0 भिन्न है, हमारे हिंदी लिखकों ने इसको व्यवसाय न मानकर आम जनता के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराई हैं । हमें हमारे दैनिक जीवन तथा बोलचाल में अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए । जैसे हमारे दैनिक जीवन की बातचीत में रामायण एवं महाभारत के पात्रों के नामों की चर्चा रहती है इसी के साथ हमें हिंदी भाषा को जो की पिछले 30 - 40 वर्षों से भ्रष्ट हो रही है के सही स्वरुप में उपयोग करने का संकल्प लेना चाहिए । हिंदी हमारी संस्कृति का हिस्सा है और हमें इसमें गर्व होना चाहिए । इतना ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं को भी निरंतर आगे बढ़ाना चाहिए । मैं एक बार फिर कहना चाहता हूँ की कृपया आप एक हिंदी पुस्तक का अनुमोदन पुस्तकालय के लिए करें ।"

इसी के साथ माननीय मुख्य अतिथि महोदय ने संकाय सदस्यों, छात्रों एवं अधिकारी कर्मचारियों से आग्रह किया कि इस हिंदी पखवाड़े के दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं में ऑनलाइन तथा उचित सामाजिक दूरी (social distancing) का पालन करते हुए भाग लें तथा हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए अन्य को भी प्रोत्साहित करें ।

पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं जैसे हिंदी श्रुतलेख, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के संकाय सदस्यों, छात्रों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ऑनलाइन तथा उचित सामाजिक दूरी (social distancing) का पालन करते भाग लिया । इसी पखवाड़े के दौरान जो हिंदी पुस्तकों की सूची निदेशक महोदय ने पुस्तकालय को क्रय हेतु प्रेषित की थी, उस सूची के अनुसार हिंदी पुस्तकों का क्रय भी किया गया जो पाठकों के लिए पुस्तकालय में उपलब्ध हैं ।

विधिवत समापन समारोह ऑनलाइन तथा उचित सामाजिक दूरी (social distancing) का पालन करते दिनांक 25 सितम्बर 2020 को हुआ, जिसमें संस्थान के निदेशक प्रोफेसर धीरज शर्मा ने मुख्य अतिथि की भूमिका निभाई तथा सभा को सम्बोधित करते हुए इस पखवाड़े के आरम्भ के

अपने विचारों से अवगत कराया तथा आग्रह किया के हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें। उन्होंने पुनः दोहराया कि यह शोध से निष्कर्ष निकला है कि जो व्यक्ति एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं उनका मानसिक विकास अधिक होता है । माननीय मुख्य अतिथि महोदय ने भारत देश की नई शिक्षा नीति पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि इसमें भारत की विभिन्न भाषाओं और हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने के प्रावधान हैं ।

आज भारत की लोक सेवा की परीक्षा में 90^0 परीक्षार्थी अंग्रेजी माध्यम से परीक्षा देते हैं । हमारी यह मानसिकता है कि अंग्रेजी भाषी अधिक आधुनिक एवं ज्ञानी हैं और हम अपने से अधिक योग्य समझते हैं । जर्मनी में 20-22 वर्ष पहले बहुत कम अंग्रेजी बोलने वाले पाए जाते थे, जिनकी संख्या अब बढ़ गई है लेकिन इसके उपरांत जर्मनी बोलने वालों के संख्या में कोई कमी नहीं आयी, इससे उनका अपनी भाषा के प्रति प्रेम स्पष्ट होता है । हमें भी हिंदी तथा छेत्रीय भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए और औरों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए ।

मुख्य अतिथि ने संस्थान के विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागिओं को नकद पुरस्कार, प्रमाणपत्र तथा स्मृति चिन्ह वितरण कर प्रोत्साहित किया तथा यह भी आग्रह किया कि हम अपने प्रण को दोहराएं तथा हिंदी पुस्तकें पढ़कर और उनपर चर्चा करके हिंदी के उपयोग को बढ़ाएं । उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन समिति का धन्यवाद किया तथा स्मृति चिन्ह वितरित कर भविष्य में और भी अधिक हिंदी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए प्रोत्साहित किया । समारोह के अंत में डॉ. रमा शंकर यादव तथा डॉ. मानस त्रिपाठी द्वारा काव्य पाठ एक बार फिर आकर्षण का केंद्र रहा ।

डॉ. अश्वनी कुमार
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भारतीय प्रबंध संस्थान रोहतक